आंखों का महीसा - अराविन्द नेत्र अस्पताल

लेखक: पावी मेहता

हिंदी प्रस्तुति: अरविन्द गुप्ता

पावी मेहता सर्विस-स्पेस की संस्थापक हैं। उन्हें गुड-रीड्स, कर्मा-ट्यूब और कर्मा-रेस्ट्रां भी स्थापित किए हैं। कर्मा रेस्ट्रां एक अनूठी संस्था है। आप रेस्ट्रां में जाकर जी भरकर खा सकते हैं पर आपका बिल हमेशा शून्य डालर आएगा। बिल पर लिखा होगा कि आपके भोजन की कीमत पिछले ग्राहकों ने चुकाई थी। और अगर आप चाहें तो आने वाले ग्राहकों के भोजन के लिए कुछ दान दे सकते हैं। अब दुनिया के दर्जनों देशों में इस प्रकार के कर्मा-रेस्ट्रां चल रहे हैं। मुझे ताज्जुब हुआ जब मैंने इंटरनेट पर अपने शहर पुणे में भी, कर्मा-रेस्ट्रां की एक ब्रांच के बारे में पढ़ा। वहां जाकर उस अनुभव से सीखने की मेरी तीव्र इच्छा है।

पावी मेहता एक फिल्म-मेकर हैं। वो सचमुच में एक बहुत अच्छी कथाकार हैं। वे दिल को छूने वाली प्रेरक कहानियां सुनाती हैं। यहां उनकी एक कहानी का उल्लेख है:

अमरीका में, रात की ठंड में, एक आदमी सड़क पर चल रहा था। तभी घुप्प अंधेरे को चीरता एक चोर आया और उसने चाकू दिखाकर उस आदमी का पर्स छीन लिया।

जब चोर जाने लगा तो आदमी ने उससे कहा? 'अगर तुम रात भर इसी तरह लोगों को लूटोगे तो ठंड से तुम्हें तकलीफ होगी। ठंड से बचने के लिए तुम मेरा कोट भी लेते जाओ।'

कोट लेकर जब चोर जाने लगा तो आदमी ने कहा, 'शायद, तुम्हें भूख लगी हो, मैं तुम्हें पास के रेस्ट्रां में खाना खिला सकता हूं।'

आदमी को तब काफी आश्चर्य हुआ जब चोर इसके लिए सहर्ष तैयार हो गया।

उसके बाद दोनों रेस्ट्रां में गए और उन्होंने खाना खाया। खाने के बाद जब बिल चुकाने का समय आया तब आदमी ने चोर से प्यार से कहा, 'मैं बिल चुकाना चाहता हूं, पर मेरा पर्स तुम्हारे पास है।'

तब चोर ने धीरे से आदमी का पर्स लौटा दिया।

तब आदमी ने उस युवा चोर से एक और गुजारिश की, 'तुमने मेरा पर्स तो लौटा दिया है। अब तुमसे एक और प्रार्थना है - अपना चाकू भी मुझे दे दो।'

उसके बाद चोर ने आदमी को अपना चाकू भी थमा दिया।

पावी मेहता ने एक अनूठी किताब लिखी है - **इन्फाईनेट विजन।** इसमें पावी मेहता ने अपनी दादाजी डा गुन्डप्पा वेंकटास्वामी की कहानी सुनाई है। लोग प्यार से उन्हें डाक्टर वी बुलाते थे। 1976 में, डाक्टर वी ने अराविन्द नेत्र अस्पताल की स्थापना की। आज यह अस्पताल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में नेत्र-सर्जरी का सबसे बड़ा अस्पताल है। यहां संक्षिप्त में उस अनूठे अस्पताल की कहानी बयां की गई है।

डा गुंडप्पा वेंकटास्वामी की जिंदगी में दो आध्यतमिक लोगों का बहुत बड़ा योगदान था - पुडुचेरी के श्री अराबिंदो और आदरणीय मां (मदर) का। इन दोनों के फोटो डाक्टर वी के कमरे में टंगे रहते थे। तीन साल तक मैं सुबह सात बजे डाक्टर वी के साथ बैठकर श्री अराबिंदो की पुस्तक **सावित्री** को पढ़ती थी। पुस्तक में मानवीय चेतना के विकास का उल्लेख है। उसमें मानवीय सम्भानाओं की भी जिक्र है। पचास सालों तक, डाक्टर वी का सुबह को यह नियम था - वा पहले ध्यान और चिंतन करते थे। फिर वो पूरे दिन लोगों की भलाई के लिए काम करते थे। उनके कमरे में यह पोस्टर लगा था: **हमारे अंदर वो शक्ति है, जो जानकारी से कहीं अधिक ताकतवर है। जिंदा रहना और प्रेम करना यही अनंत के चिन्ह हैं।**

37 साल पहले डाक्टर वी के दिमाग में एक उद्योग शुरू करने का विचार पनपा। वो तभी सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त हुए थे और एक गंभीर रोग से पीड़ित थे। फिर भी वो एक वैश्विक समस्या से जूझना चाहते थे। नए उद्योग में उन्होंने अपनी जिंदगी की सारी जमा-पूंजी लगा दी। उन्होंने अपने उद्योग के लिए बाहर से एक भी कौड़ी का कर्ज नहीं लिया। कम्पनी की 60-प्रतिशत सेवाएं लोगों को मुफ्त उपलब्ध होती हैं। कम्पनी अपनी सवाएं उन गरीब लोगों का बेंचती है, जिनके पास धन की कमी है। साथ-साथ कम्पनी की सेवाएं वर्ल्ड-क्लास होती हैं। कम्पनी न तो कोई दान स्वीकार करती है और न ही कोई कर्ज लेती है। भला ऐसी कम्पनी में क्या कोई निवेश करेगा? उसमें कौन अपनी पूंजी लगाएगा? यह सुनकर आपकी क्या प्रतिक्रिया होती? पर आज यही कम्पनी नेत्र चिकित्सा में दुनिया की सबसे बड़ी संस्था है।

मेरे परिवार में आंखों के 24 चिकित्सक हैं। परिवार के कुछ अन्य युवा लोग जल्द सी नेत्र-विशेषज्ञ बन जाएंगे। आंखों की डाक्टर न बन पाने के कारण ही, मैंने अराविन्द नेत्र अस्पताल पर एक फिल्म बनाई और उसके बारे में एक विस्तृत पुस्तक लिखी - **इन्फाईनेट विजन।** जैसे मोतियाबिंद (कैटरैक्ट) के आपरेशन के बाद मरीज को बहुत साफ दिखाई देने लगता है, वैसे ही कुछ कहानियों को सुनने के बाद हम अपने जीवन को अधिक स्पष्टता से देख पाते हैं। कुछ कहानियां हमें जीवन के सच्चे रोल को, कुछ बेहतर तरीके से समझने में मदद करती हैं। यह कहानी भी, एक वैसी ही प्रेरक कथा है। इसमें डाक्टर वी अपने दिल, दिमाग और हाथों का समन्वय करते हैं। वे गहरे आध्यात्म और सेवा की भावना से प्रेरित होकर एक अनूठा उद्योग रचते हैं। उनकी कम्पनी से लाखों-करोड़ों लोगों की आंखों में रोशनी की एक नई चमक आती है।

कहानी दक्षिण भारत में तमिलनाड स्थित एक गांव से शुरू होती है। वहां 1918 में गोविंडप्पा वेंकटस्वामी का जन्म हुआ। पांच भाई-बहनों में वे सबसे बड़े थे। वह नंगे पैर स्कूल जाते थे और घर वापस आकर भैंस की सानी-पानी करते थे। नोटबुक के अभाव में उन्होंने अक्षरों को रेत पर ही लिखकर सीखा। दस साल की उम्र तक उनके तीन रिश्तेदार, प्रसव में आई दिक्कतों में स्वर्ग सिधार चुके थे। बीमारी की हालत में गांव में कोई डाक्टर न था। इसलिए बचपन से ही उनके दिल में यह बात गहराई से बैठी। बड़े होकर वो डाक्टर बनंगे और इस प्रकार की अकारण होने वाली मृत्युओं को रोकेंगे।

वो मेडिकल कॉलेज में दाखिल हुए। वहां उनका उद्देश्य महिलाओं का डाक्टर बनना था, जिसस वो ग्रामीण महिलाओं की प्रसव के दौरान सहायता कर सकें। पर तीस साल की उम्र में ही उन्हें एक गम्भीर गठिया रोग ने आ घेरा। उनको ऊंगलियां सदा के लिए मुड़ गईं, टेढ़ी हो गयीं। दो बरस तक वो पलंग पर बीमार पड़े रहे। यह एक ऐसा रोग था जिसका कोई उपचार नहीं था। और मरीज को उसका दर्द सारी जिंदगी झेलना पड़ता था। दर्द, डाक्टर वी का, सदा साथ रहने वाला, जिगरी दोस्त बन गया। उन्होंने कभी विवाह नहीं किया। पर जब

उनकी सेहत कुछ सुधरी और शरीर में कुछ ताकत आई तो वो फिर से मेडिकल क्षेत्र में उतरे। खराब सेहत की वजह से वो अब स्त्री-विशेषज्ञ नहीं बन सकते थे। उन्हें अपनी लाइन बदलनी पड़ी। अब उन्हें नेत्र-विभाग में जाना पड़ा। कभी-कभी हमारी सबसे बड़ी कमजोरियां हमारी सबसे सबसे बड़ी ताकत बन जाती हैं। अथक परिश्रम के बाद डाक्टर वी ने अपनी मुड़ी ऊंगलियों से आंख का आंपरेशन करना सीखा। धीरे-धीरे वे बेहद सटीक - एकदम आदर्श नेत्र-सर्जरी करने लगे। दुनिया में लगभग 37-मिलियन अंधे लोग हैं। इनमें में 80-प्रतिशत लोगों के अंधेपन का उपचार से ठीक किया जा सकता है। एक सरल आपरेशन से लोगों की दृष्टि बहाल हो सकती है। शुरू के दिनों में डाक्टर वी एक पागल इंसान जैसे 24 घंटे काम करते रहे। उन्होंने अपनी टेढ़ी-मेढ़ी ऊंगलियों से एक-लाख से अधिक नेत्र आंपरेशन किए होंगे। उस समय वो एक सरकारी अस्पताल में काम करते थे। 58 साल की उम्र में डाक्टर वी सरकारी नौकरी से रिटायर हुए। सेवानिवृत्ति के पश्चात वो आराम कर सकते थे या फिर गौल्फ खेल सकते थे। पर उन्होंने कुछ अगल ही किया।

1976 में, रिटायरमेंट के बाद उन्होंने अपने पांच भाई-बहनों और उनकी पत्नियों-पतियों के साथ मिलकर मदुरई में एक आंख का क्लीनिक शुरू किया। वे सभी-के-सभी आंख के डाक्टर थे। संयुक्त परिवार की स्वस्थ्य परम्परा के कारण यह सब लोग साथ आए। इस उद्योग में उन्होंने अपनो जिंदगी की सारी जमा-पूंजी लगा दी। पूंजी के लिए परिवार ने अपने गहने बेंचे। उन्होंने अपने घर को गिरवी रखा। इस प्रकार बहुत कम पूंजी से क्लीनिक की शुरुआत की। उनके सामने कोई सुरक्षा-नेट नहीं था और कम्पनी चलाने की न तो कोई स्पष्ट योजना थी और न ही कोई पूर्व अनुभव था। पर उनके सामने बस एक लक्ष्य था - एक मिशन था। मिशन था - इलाज से अंधेपन को दूर करना। प्री दुनिया में कोई 37-मिलियन अंधे लोग हैं और शुरुआत में उनके क्लीनिक में मात्र 11 बेड थे। यह वाकई में बड़े दुस्साहस में लिया गया निर्णय था।

अब 37 साल बाद अराविन्द नेत्र अस्पताल की 50 स्थानों पर शाखाएं हैं, अस्पताल हैं। आज वो दुनिया में नेत्र-रोगों का सबसे बड़ा अस्पताल है। इसका क्या मतलब है? पिछले 37 सालों में उन्होंने 38-मिलियन (लगभग 4-करोड़) मरीजों का इलाज किया है। उन्होंने पचास लाख से ज्यादा आंखों के आपरेशन किए हैं। उनमें से अधिकांश सर्जरियां निशुल्क अथवा बहुत कम कीमत पर की गई हैं। 2008 में, बिल गेट्स ने उन्हें **ग्लोबल हेल्थ अवार्ड** से पुरुस्कृत किया। उसके अगले साल उन्हें **हेल्थ और हयूमैनिटेरियन अवार्ड** मिला। उसी वर्ष, दुनिया में नवाचार करने वाली 50-अग्रणी कम्पनियों की सूचियों में उनका नाम दर्ज हुआ। 2010 में अराविन्द आई हास्पिटल के चैयरमन को **'टाइम पत्रिका'** ने दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में स चुना। पिछले 20 सालों से अराविन्द आई हास्पिटल की केस-स्टडी, हारवर्ड यूनिवर्सिटी में मैनेजमेंट पढ़ने वाले हरेक छात्र के लिए पढ़ना अनिवार्य है। कुछ साल पहले गूगल कम्पनी के संस्थापक अपनी सजर्री करना के लिए अमरीका से अराविन्द नेत्र अस्पताल आए।

अराविन्द आई हास्पिटल के डाक्टरों की उत्पादकता बेमिसाल है। उदाहरण के लिए जहां अराविन्द आई हास्पिटल के डाक्टर सालाना 2000 सर्जरी करते हैं, वहीं भारत में नेत्र-विशेषज्ञ औसतन 400 सजर्री करते हैं। अमरीका में यह संख्या मात्रा 200 है। अमरीकी सर्जनों की तुलना में 10-गुना अधिक सजर्री कर पाना वाकई में एक कमाल की बात है। पर क्या अराविन्द आई हास्पिटल की कहानी महज एक विकासशील देश की रोचक कथा है, या फिर पश्चिम के विकसित देशों को उससे कुछ सीखने को है? इसके लिए हम अराविन्द हास्पिटल और इंग्लैंड की नैशनल हैल्थ सर्विस की तुलना करेंगे। इंग्लैंड में सरकारी संस्था - नैशनल हैल्थ सर्विस ही लोगों

की सेहत का कामकाज देखतो है। इंग्लैंड में एक साल में औसतन 5-लाख आंख की सर्जरी होती हैं, जबकि अराविन्द आई हास्पिटल अकेले 3 से 4 लाख आंख की सर्जरी करता है। इसका मतलब है कि विकासशील भारत में केवल एक संस्था, इंग्लैंड की कुल सर्जरियों की 60-प्रतिशत सर्जरियां अकेले करती है। जहां नैशनल हैल्थ सर्विस इस सेवा पर लगभग डेढ़-बिलियन पाउंड खर्च करता है, वहां अराविन्द आई हास्पिटल उसका केवल एक-प्रतिशत खर्च करता है। कम-कीमत में लाखों सजर्री की चर्चा करते समय हमें उनकी गुणवत्ता की भी तुलना करनी चाहिए। अगर हम अराविन्द आर इंग्लैंड की संस्था, दोनों को सर्जरी के 20 मापदंडों पर तोलें, तो अराविन्द उन सभी मापदंडों पर खरा उतरता है या फिर इंग्लैंड से बेहतर करता है। हम बड़ी संख्या में, बेहद कम-लागत पर उच्च गुणवत्ता वाली सजर्रियां कर सकत हैं। नवाचार में दुनिया की तमाम कम्पनियां मेहनत-मश्क्कत कर रही हैं। पर इस नवाचार का मूल स्रोत्र क्या था? कुछ लोगों के अनुसार यह खुद की परिस्थितियों पर सृजनात्मक प्रतिबंध लगाने का नतीजा था। अगर आप अन्य कम्पनियों जैसे ही प्रतिबंध लगाएंगे तो आपके नतीजे भी उन्हीं के जैसे होंगे। शायद उनमें थोड़ा अधिक नवाचार का अंश हो। परन्तु अगर आप उन प्रतिबंधों को और कठिन बनाएं तो उससे खेल अधिक मुश्किल बनेगा। और तब आएगा खेल का असली मज़ा। लगता है डाक्टर वी और उनकी टीम ने ऐसा ही कुछ किया होगा, और तभी उनके उद्योग के इतने सुंदर परिणाम निकले। उन्होंने तीन नियम बनाए और वो संदेश शुरू से ही उनकी कम्पनी का अभिन्न अंग बना। नियम एकदम सरल थे।

1 हम किसी मरीज को वापस नहीं भेजेंगे।

2 हम उच्चतम गुणवत्ता कायम करने का प्रयास करेंगे।

3 हम आत्म-निर्भर बनेंगे।

अराविन्द नेत्र अस्पताल ने यह तय किया कि वो जो कुछ भी करेगा वो गहरी संवेदना, गुणवत्ता और अपने साधनों से सम्पन्न करेगा। उनके द्वारा चुना पथ सरल नहीं था। उन्होंने अपने उसूलों से समझौता न करने की ठानी। इसे अराविन्द के संस्थपाकों को अपने मिशन को ईमानदारी से पूरा करने की मुक्ति और छूट मिली। उनके उसूल साधारण बिजनिस नियमों से बिल्कुल उल्टे थे। उन्होंने अपने काम में सामान्य बिजनिस के कोई भी दांव-पेंच फिट नहीं किए। उन्होंने अपने काम को निश्काम, सेवा-भाव से किया। अक्सर सेवा-भाव, लोगों के प्रति संवेदना और दयालुता को, बिजनिस या धंधे से, जोड़ा नहीं जाता है। परन्तु अराविन्द नेत्र अस्पताल के केस में, यह सभी मूल्य उनके दिल के बहुत करीब थे। इन्हीं मूल्यों ने उन्हें प्रेरणा दी, हिम्मत दी और उन्हें आगे बढ़ाया। श्री अरबिन्द की पुस्तक **'सावित्री'** में एक वाक्य है: **'आंतरिक मूल्यों के आधार पर ही बाहरी योजना बनती है।'** और इस संस्था के लिए यह 100-फीसदी सच था। डाक्टर वी ने अपने जीवन में बहुत सी डायरियां लिखीं। क्योंकि वे सभी एक डाक्टर की हस्तलिपि में थीं इसलिए उन्हें पढ़ना आसान नहीं था। पर मैंने उन सभी को पढ़ा। इन डायरियां में से दो प्रमुख बातें निकलीं। पहली - हरेक इंसान की आंख को राशनी दो। और दूसरी - हरेक के साथ एक-समान व्यवहार करो। यह दो महत्वपूर्ण आकांक्षाएं, वास्तविकता और आध्यात्म के बीच, एक पुल का काम करती हैं। आपको लोगों की पीड़ा के निवारण के लिए एक ठोस सेवा-प्रणाली बनानी है। और यह कार्य सभी लोगों के लिए करना है - चाहें वो किसी वर्ग, धर्म समुदाय के क्यों न हों। अक्सर अस्पतालों को यह चुनना पड़ता है कि वो 1-प्रतिशत लोगों की सेवा करेंगे अथवा 99-प्रतिशत लोगों की।

अराविन्द नेत्र अस्पताल ने शुरू से ही 100-प्रतिशत लोगों की सेवा करने का निर्णय लिया। इसलिए उन्होंने आंख की सर्जरी के रेट बहुत कम किए, और गरीबों को यह सेवा निशुल्क उपलब्ध कराई। भारत में कुल सवा-करोड़ नेत्रहीन हैं और उनमें से अधिकांश रोजाना 2-डालर से कम पर जिंदा रहते हैं। इस मुहिम में सफलता बहुत मुश्किल थो, क्योंकि अराविन्द नेत्र अस्पताल ने बिना किसी अनुदान के पूरी तरह आत्म-निर्भर होने का संकल्प लिया था। इस पर अराविन्द नेत्र अस्पताल का एक और तुर्रा था - बड़ा ही अजीबोगरीब - मरीज तय कर सकता था कि वो फीस दगा, या नहीं। फीस देना, या न देना इसे मरीज की मर्जी पर छोड़ दिया गया था। इसके लिए गरीब-अमीर आदि जैसा कोई मापदंड नहीं था। कोई साधारण किसान अस्पताल में आकर अपनी सर्जरी फीस देकर करवा सकता था। और जो व्यक्ति बाद में भारत का राष्ट्रपति बना उसने अराविन्द अस्पताल की मुफ्त सेवा का लाभ उठाया। और यह घटना वाकई में सच है। राष्ट्रपति अब्दुल कलाम अपना पर्स लाना भूल गए और वो अपनी सुरक्षा-टीम से अलग हो गए। अस्पताल के निशुल्क सेक्शन में उनका बेहतरीत, मुफ्त उपचार हुआ। इससे वे बेहद खुश हुए। अस्पताल की पूरी व्यवस्था इसी उद्देश्य की पूर्ति क लिए बनाई गई थी। लोग अपनी मर्जी से निर्णय ले सकते थे - वो पैसे देना चाहते थे, अथवा मुफ्त में इलाज चाहते। इसमें कोई भी आड़े नहीं आता था। इसके पीछे डाक्टर वी की दूरदर्शिता थी, जिसे वो बार-बार दोहराते थे। अराविन्द नेत्र अस्पताल का काम यांत्रिक रूप से लोगों को दृष्टि देना नहीं था। अस्पताल, लोगों की इज्जत-आबरू का आदर करता था और उसे सुरक्षित रखना था। अस्पताल के मॉडल में लोगों की प्रतिष्ठा के लिए एक अग्रणी स्थान था। यहां हम एक बेहद गरीब देश की बात कर रहे हैं, जहां ग्रामीण इलाकों में लोग आंखों की रोशनी खोने के बाद बस 2-3 साल ही जीवित बचते हैं। भारत में अंधा होना, एक भयंकर अभिशाप है। अंधे होने पर आपकी आजीविका या नौकरी चली जाती है। वे परिवार में और समाज में आप अपना स्थान खो देते हैं। उनके आत्म-सम्मान का गहरा धक्का लगता है। इसलिए अराविन्द नेत्र अस्पताल जो करता है वो तो जरूरी ह, परन्तु वो क्यों करता है यह उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। अस्पताल में आए मरीजों की प्रतिष्ठा का हम कैसे सम्मान करें? इसे एक अनूठी फीस प्रणाली द्वारा अंजाम दिया गया। इस प्रणाली के अंनतगत मरीज खुद तय कर सकता था - क्या वो 'जीरो-फीस' देगा अथवा 'मारकेट-रेट' देगा। यह निर्णय मरीज करता था। यह विकल्प लोगों की अस्मिता, उनकी इज्जत-आबरू को बरकरार रखता था। इसलिए जो मरीज फीस देते थे, उनकी फीस से 'मुफ्त-उपचार' वाले मरीजों का इलाज होता था। फीस देने वाले और निशल्क मरीजां, दोनों का इलाज, एक ही डाक्टरों की टीम करती थी। निशल्क मरीज अन्य मरीजों के साथ एक कमरे रहते थे और एक सामुदायिक मेस में भोजन खाते थे। दूसरी ओर फीस देने वाले मरीज, संलग्न बाथरूम वाले, ऍअरकंडीशंड कमर में अपने सहायक के साथ रह सकते थे। इसके लिए उसे अतिरिक्त फीस देनी पड़ती थी। इस प्रकार अस्पताल समर्थ लोगों की सहायता से गरीबों का उपचार करता था। अस्पताल का मुख्य ध्येय सेवा करना, मुनाफा कमाना नहीं।

पूरी जिम्मेदारी को खुद सम्भालो

अराविन्द अस्पताल के शरू होने के बाद ही एक बात जल्द ही स्पष्ट हो गई। मुफ्त-उपचार के बावजूद भी बहुत से जरूरतमंद लोग इलाज के लिए नहीं आ रहे थे। खासकर गरीब लोग जिन्हें नेत्र-सर्जरी की सबसे ज्यादा जरूरत थी अस्पताल से नदारद थे। तब अस्पताल को एक अंधे भिखारी ने दिशा दिखाई। उसने कहा, 'आप कहते हैं कि आपका इलाज मुफ्त है। पर आपके अस्पताल तक आने के लिए मुझे बस का टिकट खरीदना

पड़ेगा। अस्पताल पहुंचने के बाद मुझे ठहरने के लिए जगह खोजना होगी और खाने का इंतजाम करना होगा। नेत्रहीन होने की वजह से शायद मैं अस्पताल में अकेले नहीं आ पाऊं। अगर मेरी बेटी मेरे साथ आएगी तो उसकी एक दिन की मजदूरी का हर्जा होगा। इसलिए आपकी निशुल्क-सेवा मुझे काफी मंहगी पड़ेगी और मुझे कम-से-कम सौ रुपए खर्च करने पड़ेंगे।' अक्सर निशुल्क-सेवा गरीबों को मंहगी पड़ती है और वे उसका लाभ नहीं उठा पाते हैं। इस जानकारी के बाद अराविन्द अस्पताल ने क्या किया? अराविन्द अस्पताल कोई ट्रांसपोर्ट कम्पनी नहीं थी और न ही उनके पास अपनी बसें थीं। अस्पताल में मरीजों के रहने के कमरे भी गिनेचुने थे।

पर उस नेत्रहीन भिखारी की नसीहत के बाद अराविन्द अस्पताल ने मरीजों की सभी जरूरतों की जिम्मेदारी सम्भालन का निर्णय लिया। वर्तमान में अराविन्द अस्पताल, डाक्टरों और नर्सों की टीमों को दूर-दराज के गांवों में भेजता है। वहां वे नेत्र-शिविर लगाते हैं जिनमें चंद घंटों के अंदर सैकड़ों और कभी-कभी हजारों मरीजों की आंखों की जांच-पड़ताल की जाती है। जिन रोगियों को चश्मों की जरूरत होती है उन्हें वहीं और तभी चश्में दिए जाते हैं। जिन मरीजों को सर्जरी की आवश्यकता होती है उन्हें बसों द्वारा तुरन्त मुख्य अस्पताल भेजा जाता है। अस्पताल में उनक रहने, भोजन, इलाज आर वापस जाने की बिल्कुल मुफ्त व्यवस्था होती है। साल में इस प्रकार के 2200 नेत्र-शिविर लगाए जाते हैं। यह सभी नेत्र-शिविर सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर लगाए जाते हैं। इनमें रोटरी, लायन्स, धार्मिक संस्थाओं समेत कोई 500 अलग-अलग सामाजिक संगठनों का समावश है। इन सभी नेत्र-शिविरों को सामाजिक संस्थाएं प्रायोजित (स्पांसर) करती हैं। अराविन्द अस्पताल, इसके द्वारा सामाजिक स्वामित्व को बढ़ावा देता है। इन नेत्र-शिविरों से अस्पताल में कोई 45-प्रतिशत लोग आते हैं। नेत्र-शिविरों से समाज की सहभागिता बढ़ती है। इसलिए वे बेहत महत्वपूर्ण हैं। उससे भी अधिक इन शिविरों से लोगों में एक विश्वास और सद्भाव पैदा होता है। अस्पताल में जिन गरीब मरीजों को निशुल्क-सेवा दी जाती है उन्हें अस्पताल अपना अंतरंग सहयोगी मानता है। अपने गांवों में वापस जाकर वे लोग अराविन्द अस्पताल के सबसे बड़े प्रचारक बनते हैं। वे अपने मोहल्ले, बस्ती और गांव में अन्य मरीजों को अराविन्द अस्पताल जाने के लिए प्रेरित करते हैं। और अराविन्द अस्पताल इस प्रकार के मरीजों का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। इसलिए यहां पर एक दोतरफा रास्ता है। एक ओर अस्पताल गरीब मरीजों का इलाज करता है। दूसरी ओर यह गरीब मरीज दूर-दराज से अन्य मरीजों को अस्पताल भेजने का काम करते हैं। अराविन्द अस्पताल में गरीब मरीज एक बहुत अहम रोल अदा करते हैं। इससे अस्पताल और मरीज दोनों का पारस्परिक लाभ होता है।

अराविन्द अस्पताल नए सुझावों को - खासकर क्रांतिकारी सुझाावों का स्वागत करता है। डाक्टर वी में नई बातें सीखने की एक विलक्षण क्षमता थी। वो न जाने कहां-कहां से नई बातें खोज निकालते थे। उनमें समन्वय करने की गजब की क्षमता थी। वो अलग-अलग चीजों को आपस में संगठित करते थे - जोड़ते थे। उन्होंने पूर्व को पश्चिम से जोड़ा, प्राचीनता को आधुनिकता से जोडा, और विज्ञान को आध्यात्म से जोड़ा। उन्होंने बर्गर बनाने वाली अमरीकी कम्पनी मैकडॉनैल्ड्स से भी सीखा। भला नेत्र-चिकित्सा, बर्गर बनाने वाली कम्पनी मैकडॉनैल्ड्स से क्या सीख सकती थी? सत्तर और अस्सी के दशकों में जब डाक्टर वी अमरीका गए तो वो मैकडॉनैल्ड्स रेस्ट्रां की सुनहरी मेहराबों से बहुत प्रभावित हुए। मैकडॉनैल्ड्स बर्गर खाने से, जनता की सेहत को क्या नुकसान होता है इसे उन्होंने अनदेखा किया। वो केवल मैकडॉनैल्ड्स के मानकीकरण, उनके उत्पाद की पहचान और उनकी हर जगह उपलब्धि पर फिदा थे। वे नेत्र-चिकित्सा जगत में भी मैकडॉनैल्ड्स जैसी ही क्रांति लाने का सपना संजोने लगे, जिससे कि उत्तम प्रकार की नेत्र-सर्जरी बड़े पैमाने पर, गरीब-से-गरीब लोगों को उपलब्ध हो

पाए। उन्होंने बार-बार अपने इस कथन को दोहराया, 'मैकडॉनैल्ड्स जैसे बर्गर उपलब्ध कराता है, अगर हम वैसे ही नेत्र-चिकित्सा उपलब्ध करा पाएं तो फिर दुनिया में अंधेपन की समस्या सुलझ जाएगी।' लोग डाक्टर वी की बातों पर हंसते थे। पर डाक्टर वी ने अपनी बात को करके दिखाया। उन्होंने नेत्र-चिकित्सा, जन-जन को उपलब्ध कराने की नियत से, एसेम्बली-लाइन तकनीकों, और ज्यादा बेहतरी के लिए उद्योग जगत की तमाम वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाया। मरीज कैसे अस्पताल आते हैं, और वे किन-किन प्रक्रियाओं से गुजरते हैं, इसका डाक्टर वी ने गहन अध्ययन किया, और फिर उन्होंने हर चरण की प्रक्रियाओं को बेहतर बनाया।

अराविन्द अस्पताल के ऑपरेशन थियेटरों में आप इसको बहुत स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। वहां मरीजों के पलंगों की कतारें होती हैं और नेत्र-सर्जन होते हैं। हरेक शिफ्ट के सर्जन की सहायता चार बेहद कुशल नर्सं करती हैं। जब एक ओर डाक्टर किसी मरीज की सर्जरी पूरी कर रहा होता है, वहीं दूसरी ओर नर्सें एक अन्य मरीज को ऑपरेशन के लिए तैयार कर रही होती हैं। सर्जन और नर्सों के काम में जबरदस्त तालमेल होता है - जैसे संगीत सभा मं अलग-अलग वाद्ययंत्रों के बीच होता है। एक सर्जरी समाप्त करके, डाक्टर अपना माईक्रोस्कोप घुमाकर बस दूसरे मरीज की आंख पर केंद्रित करता है और ऑपरेशन शरू करता है। इसलिए अराविन्द अस्पताल के कर्मठ सर्जन मोतियाबिंद (कैटरैक्ट) का ऑपरेशन केवल साढ़े तीन मिनट में सम्पन्न कर पाते हैं!

और यह सभी नर्सें कहां से आती हैं? वे सभी मदुराई के आसपास के गांवों से आती हैं। हाई-स्कूल पास करने के बाद इन लड़कियों को एक बेहद कठिन ट्रनिंग प्रोग्राम से गुजरना पड़ता है। उसके बाद ही वे नर्सें या मेडिकल तकीनीशियन बनती हैं। उनके प्रशिक्षण को वही बोर्ड मान्यता देता है जो अमरीकी नर्सिंग प्रोग्राम को मान्यता देता है। उनकी ट्रनिंग बहुत उच्च गुणवत्ता की होती है। परन्तु लोगों को सबसे ज्यादा आश्चर्य अराविन्द अस्पताल की आर्थिक स्थिरता और सम्पन्नता पर होता है। यह अस्पताल जबरदस्त मुनाफा कमाता है। कुछ साल पहले अराविन्द अस्पताल ने 2.7-करोड़ के टर्नओवर पर 1.3-करोड़ अमरीकी डॉलर का मुनाफा कमाया। **फोर्बस** पत्रिका ने, एक नॉन-प्राफिट कम्पनी के लिए इसे एक बहुत बड़ी उपलब्धि माना। अराविन्द अस्पताल में मरीजों को दी जाने वाली सभी सेवाएं उनके द्वारा दी गई फीस से निकलती हैं। अस्पताल अपनी सेवाएं सभी लोगों को उपलब्ध कराने के बाद भी आर्थिक रूप से पुख्ता है। वैसे चिकित्सा जगत 'कमी' के संदेश पर फलता-फूलता है। उसके पीछे मान्यता है कि अच्छी स्वास्थ्य व्यवस्था हरेक को उपलब्ध हो ही नहीं सकती है। पर डाक्टर वी ने, एक अनूठा और अलग मॉडल स्थापित किया जिसमें हर व्यक्ति को स्वास्थ्य-सेवा उपलब्ध हो सकती थी। डाक्टर वी के मॉडल के अनुसार - पहले काम करो, पैसा तो बाद में आ ही जाएगा। अराविन्द अस्पताल में लोगों को सचमुच हमेशा ऐसा ही लगा। जब उनके पास बहुत कम साधन थे, तभी भी वे उन्हं पर्याप्त लगते थे। फंडिंग और अनुदान देने वाली संस्थाओं को तब बेहद आश्चर्य होता जब अराविन्द अस्पताल दान लेने से इंकार करता था। शायद इसी मानसिकता के कारण उन्होंने अपनी ताकत को सही प्रकार आंका और अपने साधनों का समुचित उपयोग किया। गांव की हाई-स्कूल पास लड़की में उन्हें एक विश्व-स्तरीय मेडिकल प्रोफेशनल दिखाई देता था। एक गरीब मरीज में उन्हें बड़ी चुनौती दिखाई देती थी। अक्सर लोग, डाक्टर वी से आकर अच्छे डाक्टरों, नर्सों और प्रबंधकों के अभाव और उनके न मिलने की शिकायत करते। उन्हें सुनकर डाक्टर वी हंसते और कहत थे, 'अच्छे लोगों का मिलना हमेशा मुश्किल होता है, अच्छे लोगों को तो तैयार करना पड़ता है।' और डाक्टर वी ने वही किया। अराविन्द अस्पताल अपनी 100-प्रतिशत नर्सों, 95-प्रतिशत डाक्टरों को खुद प्रशिक्षित

करता है। भारत के 95-प्रतिशत नेत्र-डाक्टर अराविन्द अस्पताल में ट्रेन किए जाते हैं। अराविन्द अस्पताल नियमित रूप से हावर्ड और जॉन-हॉपकिंस जैसे नामी-गिरामी अस्पतालों के डाक्टरों को ट्रेन करता है। अराविन्द अस्पताल महज मोतियाबिंद (कैटेरेक्ट) का इलाज करने वाला अस्पताल नहीं है। नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में अराविन्द एक सुपर-स्पैशियैलिटी अस्पताल है।

क्योंकि अस्पताल आर्थिक रूप स पूर्णत: आत्मनिर्भर है इसलिए वो परम्परा से हट कर कुछ क्रांतिकारी निर्णय ले पाया। अस्सी के दशक में कैटैरैक्ट सर्जरी में कृत्रिम इंट्रा-आक्यूलर-लेंसों का चलन बढ़ा। इंट्रा-आक्यूलर लेंस सर्जरी से उपचार में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। आंख के प्राकृतिक लेंस को निकालकर वहां इस कृत्रिम इंट्रा-आक्यूलर लेंस को फिट किया जाता था। इस नए लेंस की कीमत 150 से 300 अमरीकी डालर के बीच थी। विकासशोल देश के रोगी के लिए यह बहुत बड़ी रकम थी। पर अराविन्द अस्पताल, मोतियाबिंद मरीजों क लिए विश्व-स्तरीय गुणवत्ता चाहता था। उस समय सभी अंतराष्ट्रोय संस्थाओं ने भारत में इस उच्च तकनीक को लाने का विरोध किया। यहां तक कि विश्व स्वास्थ्य संस्था (डब्लू एच ओ) भी गरीब भारत में इन मंहगे लेंसों के लाने के पक्ष में नहीं थी। अराविन्द अस्पताल ने इन सब दलीलों को शांति से सुना और अपना काम जारी रखा। उन्होंने इन आधुनिक लेंसों को भारत में ही बनाना शरू किया। उन्होंने एक अंतराष्ट्रोय प्रमाणित इंट्रा-आक्यूलर लेंस निर्माण के लिए कारखाना लगाया और इन आधुनिक लेंसों को भारत में निर्माण शरू किया। उन्होंने इन आधुनिक लेंसों की कीमत 300 डालर से घटाकर 10 डालर की। फिर उसकी कीमत घटाकर मात्र दो डालर की। आज अराविन्द अस्पताल इन आधुनिक लेंसों को 170 देशों को निर्यात करता है। वर्तमान में अराविन्द इन लेंसों के माध्यम से न केवल दुनिया के लाखों लोगों को बेहतर दृष्टि प्रदान कर रहा है। आज अराविन्द दुनिया के 10-प्रतिशत इंट्रा-आक्यूलर लेंस बनाता है। लेंसों के साथ-साथ अराविन्द, नेत्र चिकित्सा से जुड़े तमाम उपकरण और दवाईयां भी बनाता है।

अपने प्रतियोगियों को ट्रेन करो

इसमें कोई शक नहीं कि अराविन्द अस्पताल के हाथों में कोई जादू था। अगर आपके पास अराविन्द जैसा कोई करिश्मा होता तो फिर आप उसका क्या करते? क्या आप उसे छिपाकर, गुप्त रखते? क्या आप उसकी सुरक्षा के लिए चारों ओर एक किले जैसी दीवार खड़ी करते? पर अराविन्द ने इसका बिल्कुल उल्टा किया। अरविन्द ने अपने प्रतियोगियों को ट्रन किया - उन्हें प्रशिक्षित किया। उन्होंने अपने पूरे शोध और काम को छिपाने की बजाए उसे ओपन-सोर्स बनाया। अराविन्द अस्पताल ने अपने दिल और दरवाजों को खोला और अपने प्रतियोगियों को बुलाकर कहा, 'हम आपकी मदद करेंगे। हम जरूर आपकी मदद करेंगे।' अराविन्द अस्पताल आज 60 देशों में, सैकड़ों अस्पतालों में काम करता है। उसने हजारों नेत्र कर्मियों को ट्रनिंग दी है। अराविन्द अस्पताल, अपने ज्ञान और तकनीकों को सबके साथ बांटता है जिससे कि लाखों लोग लाभांवित हो सकें। बांटने से ज्ञान का प्रकाश सभी ओर फैलता है।

मीनाक्षी मंदिर, मेरे शहर मदुराई के बीचोंबीच बसा है। मैं इसी शहर में बड़ी हुई। यह मंदिर कोई 2500 साल पुराना है और इसको कई पीढ़ियों के शासकों ने मिलकर बनाया। डाक्टर वी, मीनाक्षी मंदिर को देखकर कहते थे कि - हमें संस्थाओं को मंदिरों जैसे बनाना चाहिए। यहां पर उनके ज़ोर मंदिर के धार्मिक पक्ष पर न

होकर उसकी चिरआयु पर था। ऐसी संस्था बनाओ जो चिरआयु हो - जिसकी बहुत लम्बी उम्र हो। ऐसी संस्था बनाओ जो आने वाली तमाम पीढ़ियां को प्रेरित करे। ऐसी संस्था बनाओ जो किसी एक व्यक्ति की तिजोरी न भरे, पर जिससे पूरी मानवता लाभांवित हो। जहां सत्य फले-फूले। जहां दिल, दिमाग और हाथों के बीच में तालमेल हो। यह थी डाक्टर वी संस्थाओं के बारे में दृष्टि।

अराविन्द नेत्र अस्पताल में कोई 4000 लोग काम करते हैं। यह सभी अत्यन्त साधारण लोग हैं। इनमें से कोई भी सुपर-हीरो नहीं है। इन साधारण लोगों में कई भी खामियां भी हैं और इन्होंने अपने जीवन में तमाम संघष झेले हैं। पर इन साधारण लोगों ने आपस में मिलकर एक असाधारण और बहुत सुंदर काम किया है। यहां डाक्टर वी के कुछ अनलिखे संदेश हैं।

1 करुणा और दया को कभी मत भूलो: डाक्टर वी ने दिखाया कि जब करुणा और दया काम का केंद्र होता है तो उससे काम बेहतर, पारदर्शी, समतामूलक होता है और उसका बहुत तेजी से प्रचार-प्रसार होता है। संस्था के सभी अवयव एक-दूसरे के पूरक होते हैं। इससे एक नई तरह की व्यवस्था बनती है जो सभी को लाभ पहुंचाती है।

2 सेवा करो और लायक बनो: जब लोगों की सेवा आपका मूल ध्येय होता है और आप बिना किसी शर्त के लोगों की सेवा करते हैं तो उससे आपका नजरिया बदलता है। फिर आपको अनजानी स्थितियों में भी मूल्य नजर आने लगते ह। अपने कार्य से आप लोगों में विश्वास पैदा करते हैं और उनका दिल जीतते हैं। केवल पैसों से यह सम्पन्न नहीं हो सकता है। दुनिया में ऐसी कम्पनियां बहुत कम होंगी जो अपने प्रतियोगियों को ट्रन करती हों, उनकी सहायता करती हैं। हम सभी आपस में एक अदृश्य डोर से बंधे हैं। करुणा और दया हमं एक बेहतर इंसान बनाती है।

3 उत्तम दृष्टि विकसित करो: इस बात को डाक्टर वी बार-बार दोहराते थे। वे मानते थे कि जैसे बाहरी अंधापन होता है वैसे ही लोगों में आंतरिक अंधापन भी होता है - गुस्सा, लालच, ईर्ष्या आदि। इनसे हमारी दृष्टि धुंधली पड़ती है और हम अपने अगले कदम को नहीं देख पाते हैं। उन्हें लगता था कि संस्था का विकास तभी होगा जब उनमें काम करने वाले व्यक्तियों का विकास होगा। हमारे विचारों और काम में स्पष्टता तभी आएगी जब हमारा दिल और दिमाग अनुशासित होगा। जब करुणा और दया आपके काम का केंद्र होगी तब आप उच्च विवेक से काम करेंगे। इस राह पर चलकर आप एक दिन अपनी चरम सीमाओं और सम्भावनाओं तक जरूर पहुंचेंगे।

अंत: 11 मार्च 2015